=कर्म; **विद्वान्**=ज्ञानी; **युक्तः**=पूर्णतः तत्पर; **समाचरन्**=भलीभाँति करता हुआ।

अनुवाद

ज्ञानी पुरुष सकाम कर्मों में आसक्ति वाले अज्ञानियों की बुद्धि में भ्रम उत्पन्न न करे, अर्थात् उन्हें कर्म से विमुख न करे; वरन् अपने आचरण से उन्हें भक्तिभाव के साथ कर्म करने में ही लगाये।।२६।।

तात्पर्य

वेदैश्च सर्वैरहमेव वेद्यः—यह सिद्धान्त सम्पूर्ण वैदिक कर्मकाण्ड का पर्यवसान है। लौकिक क्रियाओं सहित वेदों में आये सब कर्मों और यज्ञों का प्रयोजन श्रीकृष्ण को जानना है, जो जीवन के परम लक्ष्य हैं। परन्तु मायाबद्ध जीव तो इन्द्रियतृप्ति से अधिक कुछ भी नहीं जानते; इसलिए वे वेदों का भी इतना ही तात्पर्य समझते हैं। वस्तुतः इन्द्रिय-निग्रह करने से शनैः-शनैः कृष्णभावना प्राप्त हो जाती है। अतः कृष्णभावनाभावित महापुरुष को चाहिए कि दूसरों के कार्य अथवा ज्ञान में भ्रम उत्पन्न किये बिना अपने आचरण से ऐसा आदर्श स्थापित करे जिसके अनुसार सम्पूर्ण कर्मफल को श्रीकृष्ण की सेवा में समर्पित किया जा सके। कृष्णभावनाभावित ज्ञानी इस प्रकार कर्म करे जिससे इन्द्रियसुख के लिए कर्म करने वाले अज्ञानी को कर्म करने की विधि का और सदाचरण का बोध हो जाय। यद्यपि अज्ञानी की क्रियाओं में विघ्न डालना ठीक नहीं, परन्तु जो मनुष्य एक अंश में भी कृष्णभावनाभावित हो, उसे अन्य वैदिक विधियों की उपेक्षा करके सीधे भगवद्भक्ति में नियुक्त किया जा सकता है। इस प्रकार के सौभाग्यशाली के लिए वैदिक कर्मकाण्ड की कोई आवश्यकता नहीं, कृष्णभावनामृत की सीधी वीथि में स्वधर्म का आचरण करने से समग्र निःश्रेयस की सिद्धि हो जाती है।

13/3

प्रकृतेः क्रियमाणानि गुणैः कर्माणि सर्वशः।
अहंकारविमूढात्मा कर्ताहमिति मन्यते।।२७।।

प्रकृतेः=अपरा प्रकृति के; **क्रियमाणानि**=सम्पादित होते हैं; **गुणैः**=गुणों द्वारा; **कर्माणि**=कर्म; **सर्वशः**=सम्पूर्ण; **अहंकारविमूढात्मा**=अहंकार से मोहित चित्त वाला; **कर्ता**=करने वाला हूँ; **अहम्**=मैं; **इति**=इस प्रकार; **मन्यते**=मानता है।

अनुवाद

सम्पूर्ण कर्म वास्तव प्रकृति के गुणों द्वारा सम्पादित होते हैं; परन्तु गुणों से उत्पन्न अहंकार से मोहित जीवात्मा अपने को इनका कर्ता मान बैठता है।।२७।।

तात्पर्य

यदि एक कृष्णभावनाभावित पुरुष और एक विषयी, ये दोनों समान कर्म में प्रवृत्त हों, तो यद्यपि ऐसा लगेगा कि दोनों समान स्तर पर कार्य कर रहे हैं, परन्तु वास्तव में दोनों की स्थितियों में आकाश-पाताल का अन्तर है। विषयी में मिथ्या अहंकारवश यह मान्यता रहती है कि सम्पूर्ण क्रियाओं का कर्ता वह स्वयं है। वह यह